

संखेज्जभागवद्धी काए परिवद्धीए? ।।२०७।।

संख्यातभागवृद्धि किस वृद्धि द्वारा वृद्धिको प्राप्त होती है? ।।२०७।।

एदं पुच्छासुत्तं दोण्णि आदिं कादूण जाव उक्कस्ससंखेज्जयं ति ताव एदाणि संखेज्जवियप्पद्वाणाणि अवेक्खदे (\* अ आ ता प्रतिषु 'उवेक्खदे' इति पाठः।) । एदस्स णिण्णयत्थं उत्तरसुत्तं भणदि --

यह पृच्छासूत्र दो से लेकर उत्कृष्ट संख्यात तक इन संख्यात विकल्पोंकी अपेक्षा करता है, इसके निर्णयके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

जहण्णस्स असंखेज्जयस्स रूवूणयस्स संखेज्जभागपरिवद्धी, एवडिया परिवद्धी ।।२०८।।

एक कम जघन्य असंख्यातकी वृद्धिसे संख्यातभागवृद्धि होती है। इतनी वृद्धि होती है ।।२०८।।

'जहण्णयस्स असंखेज्जयस्स रूवूणयस्स' इदि भणिदे उक्कस्सं संखेज्जयं घेत्तव्वं । उज्जुएण उक्कस्ससंखेज्जेण इत्ति अभणिदूण सुत्तगउरवं कादूण किमद्धं उच्चदे 'जहण्णयस्स (\* ता प्रतौ 'वुच्चदे? जहण्णयस्स' इति पाठः।) असंखेज्जयस्स रूवूणयस्स' इत्ति? उक्कस्ससंखेज्जयस्स पमाणेण सह संखेज्जभागवद्धीए पमाणपरुवणद्धं । परियम्मादो उक्कस्ससंखेज्जयस्स पमाणमवगदमिदि ण पच्चवद्वाणं कादुं जुत्तं, तस्स सुत्तत्ताभावादो । एदस्स णिस्सेसस्स आइरियाणुग्गहणेण पदविणिग्गयस्स एदम्हादो पुधत्तविरोहादो वा ण तदो उक्कस्ससंखेज्जयस्स पमाणसिद्धी । एदेण उक्कस्ससंखेज्जेण रूवाहियकंडएण गुणिदकंडयमेत्ताणमणंतभागवद्धीणं चरिमअणंतभागवद्धिद्वाणे भागे हिदे जं भागलद्धं तं तम्हि चेव पडिरासिय पक्खित्ते पढमसंखेज्जभागवद्धिद्वाणमुप्पज्जदि । एदम्हादो पक्खेवादो एगाविभागपडिच्छेदे अवणिदे द्वाणंतरं होदि । एदं हेट्ठिमअणंतभागवद्धिद्वाणंतरेहितो अणंतगुणं । असंखेज्जभागवद्धिद्वाणंतरेहितो असंखेज्जगुणं । उवरिमअणंतगुणवद्धीए हेट्ठिमअणंतभागवद्धिद्वाणंतरेहितो अणंतगुणं । असंखेज्जगुणवद्धीए हेट्ठिमअसंखेज्जभागवद्धिद्वाणंतरेहितो असंखेज्जगुणं । अणंतगुणवद्धीए हेट्ठिमसंखेज्जभागवद्धिद्वाणंतरेहितो संखेज्जभागहीणं संखेज्जगुणहीणं असंखेज्जगुणहीणं वा । एवं फइयंतराणं पि थोवबहुत्तं जाणिय वत्तव्वं । असंखेज्जलोगमेत्तच्छद्वाणब्भंतरे द्विदसंखेज्जभागवद्धीणमेवं चेव परुवणा कायव्वा ।

'एक कम जघन्य असंख्यात' के कहनेपर उत्कृष्ट संख्यातको ग्रहण करना चाहिए।

शंका -- सीधेसे उत्कृष्ट संख्यात न कहकर सूत्रको बड़ा करके 'एक कम जघन्य असंख्यात' ऐसा किसलिए कहा जा रहा है?

समाधान -- उत्कृष्ट संख्यातके प्रमाणके साथ संख्यातभागवृद्धिके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेके लिए वैसा कहा गया है। यदि कहा जाय कि उत्कृष्ट संख्यातका प्रमाण परिकर्मसे अवगत है, तो ऐसा प्रत्यवस्थान करना योग्य नहीं है, क्योंकि, उसमें सूत्ररूपता नहीं है। अथवा, आचार्यके अनुग्रहसे परिपूर्ण होकर पदरूपसे निकले हुए इस परिकर्मके स्रोतका इस षट्खंडागमसे पृथक् होनेका विरोध है, अतएव भी उससे उत्कृष्ट संख्यातका प्रमाण सिद्ध नहीं होता।

इस उत्कृष्ट संख्यातका एक अधिक काण्डकसे गुणित काण्डक प्रमाण अनन्तभागवृद्धियोंसे अन्तिम अनन्तभागवृद्धिस्थानमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसे उसमें ही प्रतिराशि करके मिलानेपर संख्यातभागवृद्धिका प्रथम स्थान उत्पन्न होता है। इसमेंसे एक अविभागप्रतिच्छेदके कम करनेपर स्थानान्तर होता है। यह अधस्तन अनन्तभागवृद्धिस्थानान्तरोंसे अनन्तगुणा है। असंख्यातभागवृद्धिस्थानान्तरोंसे असंख्यातगुणा है। उपरिम अनन्तगुणवृद्धिके अधस्तन अनन्तभागवृद्धिस्थानान्तरोंसे अनन्तगुणा है। असंख्यातगुणवृद्धिके अधस्तन असंख्यात भागवृद्धि स्थानान्तरोंसे असंख्यातगुणा है। अनन्तगुणवृद्धिके अधस्तन संख्यातभागवृद्धिस्थानान्तरोंसे संख्यातवें भागसे हीन, संख्यातगुणा हीन अथवा असंख्यातगुणा हीन है। इस प्रकार स्पर्द्धकान्तरोंके भी अल्पबहुत्वको जानकर कहना चाहिए। असंख्यात लोकमात्र षट्स्थानोंके भीतर स्थित संख्यातभागवृद्धियोंकी इसी प्रकार ही प्ररूपणा करनी चाहिए।

संखेज्जगुणवद्धी काए परिवद्धीए? ॥२०९॥

संख्यातगुणवृद्धि किस वृद्धिसे कम है? ॥ २०९॥

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

जहण्णयस्स असंखेज्जयस्स रूवूणयस्स संखेज्जगुणपरिवद्धी, एवडिया परिवद्धी ॥२१०॥

वह एक कम जघन्य असंख्यातकी वृद्धिसे वृद्धिगत है। इतनी मात्र वृद्धि होती है ॥२१०॥

कंडयमेतसंखेज्जभागवद्धीयो गंतूण पुणो उवरि संखेज्जभागवद्धिविसयम्मि द्विदचरिमअणंतवद्धिद्वाणे उक्कस्ससंखेज्जेण गुणिदे संखेज्जगुणवद्धी होदि। पुणो हेद्धिमद्वाणम्मि पडिरासिदम्मि इमाए वद्धीए पक्खित्ताए पढमं संखेज्जगुणवद्धिद्वाणं होदि। उक्कस्ससंखेज्जमेतउव्वंकेसु एगाविभागपडिच्छेदे अवणिदे द्वाणंतरं होदि। एदं द्वाणंतरं हेद्धिमउव्वंकद्वाणंतरेहंतो अणंतगुणं। चत्तारिअंकद्वाणंतरेहंतो असंखेज्जगुणं। पंचंकद्वाणंतरेहंतो असंखेज्जगुणं। उवरिमअडुंक-हेद्धिमउव्वंकद्वाणंतरेहंतो अणंतगुणं। पढमछद्वाणम्मि उवरिम-पढमसत्तंकादो हेद्धिमचत्तारिअंकद्वाणंतरेहंतो असंखेज्जगुणं। विदियसंखेज्जगुणवद्धीए हेद्धिमसंखेज्जभागवद्धिद्वाणंतरेहंतो संखेज्जगुणं संखेज्जभागहीणं संखेज्जगुणहीणं असंखेज्जगुणहीणं वा। इमं चेव संखेज्जगुणवद्धिं उव्वंकसंखेज्जमेतउव्वंकं संखेज्जगुणवद्धिअभंतरफद्दयसलागाहि ओवट्टिय रूवे अवणिदे फद्दयंतरं होदि। एदं हेद्धिमअणंतभागवद्धिपक्खेवफद्दयंतरेहंतो अणंतगुणं। चत्तारिअंकफद्दयंतरेहंतो असंखेज्जगुणं। पंचंकपक्खेवफद्दयंतरेहंतो असंखेज्जगुणं। एवमुवरिमफद्दयंतरेहि वि सह जाणिदूण सण्णियासो कायव्वो। एवमसंखेज्जलोगमेतछद्वाणभंतरे द्विदसंखेज्जगुणवद्धीणं परुवणा कायव्वा। एत्थ गंथबहुत्तभएण जण्ण लिहिदं तमेदेण उवदेसेण भणिय गेण्हियव्वं।

काण्डकप्रमाण संख्यातभागवृद्धियाँ जाकर फिर आगे संख्यातभागवृद्धिके विषयमें स्थित अन्तिम अनन्तभागवृद्धिस्थानको उत्कृष्ट संख्यातसे गुणित करनेपर संख्यातगुणवृद्धि होती है। फिर प्रतिराशिभूत अधस्तन स्थानमें इस वृद्धिको मिलानेपर प्रथम संख्यातगुणवृद्धिस्थान होता है। उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण ऊर्वकोंमेंसे एक अविभागप्रतिच्छेदके कम करनेपर स्थानान्तर होता है। यह स्थानान्तर अधस्तन ऊर्वक स्थानान्तरोंसे अनंतगुणा, चतुरंक स्थानान्तरोंसे असंख्यातगुणा, पंचांक स्थानान्तरोंसे असंख्यातगुणा, उपरिम अष्टांकके अधस्तन ऊर्वकस्थानान्तरोंसे अनन्तगुणा, प्रथम षट्स्थानमें उपरिम प्रथम सप्तांकसे अधस्तन चतुरंकस्थानान्तरोंसे असंख्यातगुणा तथा द्वितीय संख्यातगुणवृद्धिसे अधस्तन संख्यातभागवृद्धिस्थानान्तरोंसे संख्यातगुणा, संख्यातभागहीन, संख्यातगुणा हीन अथवा असंख्यातगुणा हीन है। इसी संख्यातगुणवृद्धिको उत्कृष्ट संख्यातमात्र ऊर्वकको

संख्यातगुणवृद्धिके भीतर स्पर्द्धकशलाकाओंसे अपवर्तित कर एक अंकके कम करनेपर स्पर्द्धकान्तर होता है। यह अधस्तन अनन्तभागवृद्धि प्रक्षेपस्पर्द्धकान्तरोंसे अनन्तगुणा, चतुरंकस्पर्द्धकान्तरोंसे असंख्यातगुणा और पंचंकप्रक्षेपस्पर्द्धकान्तरोंसे असंख्यातगुणा है। इसी प्रकार उपरिम स्पर्द्धकान्तरोंके भी साथ जानकर तुलना करनी चाहिए। इस प्रकार असंख्यात लोकमात्र षट्स्थानोंके भीतर स्थित संख्यातगुणवृद्धियोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए। यहाँ ग्रन्थविस्तारके भयसे जो नहीं लिखा गया है उसे इस उपदेशसे कहकर ग्रहण करना चाहिए।

असंखेज्जगुणपरिवद्धी काए परिवद्धीए? ॥२११॥

असंख्यातगुणवृद्धि किस वृद्धिके द्वारा वृद्धिगत है? ॥२११॥

सुगमं ।

यह सूत्र सुगम है ।

असंखेज्जलोगगुणपरिवद्धी, एवडिया परिवद्धी ॥२१२॥

वह असंख्यात लोकोंसे वृद्धिगत है । इतनी वृद्धि होती है ॥२१२॥

कंडयमेत्तछअंकेसु गदेसु समयाविरोहेण वड्ढिदउवरिमछअंकविसयम्मि द्विदचरिमउव्वंके असंखेज्जेहि लोगेहि गुणिदे असंखेज्जगुणवद्धी उप्पज्जदि । उव्वंकं पडिरासिय तत्थ तम्मि पक्खित्ते असंखेज्जगुणवद्धिद्वाणं होदि । असंखेज्जगुणवद्धीए एगाविभागपडिच्छेदे अवणिदे द्वाणंतरं होदि । एदं हेड्ढिमअणंतभागवद्धिद्वाणंतरेहितो अणंतगुणं । असंखेज्जभागवद्धि-संखेज्जभागवद्धि-संखेज्जगुणवद्धिद्वाणंतरेहितो असंखेज्जगुणं । उवरिमअसंखेज्जगुणवद्धिद्वाणादो हेड्ढिमअणंतभाग-वद्धिद्वाणंतरेहितो अणंतगुणं । असंखेज्जभागवद्धिद्वाणंतरेहितो असंखेज्जगुणं । संखेज्जभागवद्धि-द्वाणंतरेहितो संखेज्जगुणं संखेज्जभागहीणं संखेज्जगुणहीणं असंखेज्जगुणहीणं वा । संखेज्जगुणवद्धिअसंखेज्जगुणवद्धिद्वाणंतरेहितो असंखेज्जगुणहीणं । उवरि जाणिय णेयव्वं । इमाए असंखेज्जगुणवद्धीए एत्थतणफदयसलागाहि ओवद्धिदाए फदयं होदि । एत्थ एगाविभागपडिच्छेदे अवणिदे फदयंतरं होदि । एदं पि हेड्ढिम-उवरिमफदयंतरेहि सह सण्णिकासिदव्वं ।

काण्डकप्रमाण छह अंकोंके बीतनेपर यथाविधि वृद्धिको प्राप्त उपरिम षडंकके विषयमें स्थित अन्तिम ऊर्वकको असंख्यात लोकोंसे गुणित करनेपर असंख्यातगुणवृद्धि उत्पन्न होता है । ऊर्वकको प्रतिराशि करके उसमें उसे मिलानेपर असंख्यात गुणवृद्धिस्थान होता है ।

असंख्यातगुणवृद्धिमेंसे एक अविभागप्रतिच्छेदके कम करनेपर स्थानान्तर होता है। यह अधस्तन अनन्तभागवृद्धिस्थानान्तरोंसे अनन्तगुणा; असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणवृद्धिस्थानान्तरोंसे असंख्यातगुणा, उपरिम असंख्यात गुणवृद्धिस्थानसे नीचेके अनन्तभागवृद्धिस्थानान्तरोंसे अनन्तगुणा, असंख्यातभागवृद्धिस्थानान्तरोंसे असंख्यातगुणा, संख्यातभागवृद्धि स्थानान्तरोंसे संख्यातगुणा, असंख्यातभागहीन, संख्यातगुणहीन अथवा असंख्यातगुणहीन तथा संख्यातगुणवृद्धि व असंख्यातगुणवृद्धिस्थानान्तरोंसे असंख्यातगुणा हीन है। आगे जानकर ले जाना चाहिए। इस असंख्यातगुणवृद्धिको यहाँकी स्पर्द्धकशलाकाओंसे अपवर्तित करनेपर स्पर्द्धक होता है। इसमेंसे एक अविभागप्रतिच्छेदके कम करनेपर स्पर्द्धकान्तर होता है। इसकी भी अधस्तन व उपरिम स्पर्द्धकान्तरोंके साथ तुलना करनी चाहिए।

अणंतगुणपरिवद्धी काए परिवद्धीए? ।।२१३।।

अनन्तगुणवृद्धि किस वृद्धिसे वृद्धिगत है? ।।२१३।।

सुगमं ।

यह सूत्र सुगम है ।

सव्वजीवेहि अणंतगुणपरिवद्धी एवडिया परिवद्धी ।।२१४।।

अनन्तगुणवृद्धि सब जीवोंसे वृद्धिगत है। इतनी मात्र वृद्धि होती है ।।२१४।।।

हेड्ढिमउव्वंके सव्वजीवरासिणा गुणिदे अणंतगुणवद्धी होदि। तं चेव पडिरासिय अणंतगुणवद्धिं पक्खित्ते अणंतगुणवद्धिद्वाणं होदि। एदाए चेव वद्धीए अणंतगुणवद्धिफइयसलागाहि ओवट्टिदाए फइयं होदि। एत्थ वि द्वाणंतर-फइयंतरसण्णकासो कायव्वो। एवमसंखेज्जलोगमेत्तच्छद्वाणट्टिद-अणंतगुणवद्धीणं परुवणा कायव्वा। एदेण सुत्तेण अणंतरोवणिधा परुविदा।

अधस्तन ऊर्वकको सब जीवराशिसे गुणा करनेपर अनन्तगुणवृद्धि होती है। उसीको प्रतिराशि करके अनन्तगुणवृद्धिको मिलानेपर अनन्तगुणवृद्धिस्थान होता है। इसी वृद्धिको अनन्तगुणवृद्धि स्पर्द्धकशलाकाओंसे अपवर्तित करनेपर स्पर्द्धक होता। यहाँपर भी स्थानान्तर और स्पर्द्धकान्तरोंसे तुलना करनी चाहिए। इस प्रकार असंख्यात लोकमात्र षट्स्थानोंमें स्थित अनन्तगुणवृद्धियोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए। इस सूत्रके द्वारा अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा की गयी है।

संपधि एदेणेव देसामासियभावेण सूचिदं परंपरोवणिधं भणिस्सामो। तं जहा -- जहण्णद्वाणे सब्वजीवरासिणा भागे हिदे जं भागलद्धं तम्मि जहण्णद्वाणं पडिरासिय पक्खित्ते पढममणंतभागवद्धिद्वाणं होदि। पुणो विदिये अणंतभागवद्धिद्वाणे भण्णमाणे पढमअणंतभागवद्धिद्वाणम्मि वद्धिदपक्खेवे अवणिदे जहण्णद्वाणं होदि। पुणो सब्वजीवरासिं विरलिय जहण्णद्वाणे समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स पक्खेवपमाणं पावदि। पुणो अवणिदपक्खेवं पि एदिस्से विरलणाए समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स सब्वजीवरासिणा सगलपक्खेवं खंडिदूण एगखंडपमाणं पावदि। पुणो एदस्स सगलपक्खेवअणंतिमभागस्स पिसुल इत्ति सण्णा होदि। पुणो एत्थ एगरूवं हेद्धिमसगलपक्खेवपिसुलं च घेत्तूण पढमअणंतभागवद्धिद्वाणं पडिरासिय पक्खित्ते विदियमणंतभागवद्धिद्वाणमुप्पज्जदि।

अब इसी सूत्रके द्वारा देशामर्शक रूपसे सूचित परंपरोपनिधाको कहते हैं। वह इस प्रकार है -- जघन्य स्थानमें सब जीवराशिका भाग देनेपर जो लब्ध हो उसको जघन्य स्थानकी प्रतिराशि करके मिलानेपर प्रथम अनन्तभागवृद्धिस्थान होता है। पुनः द्वितीय अनन्तभागवृद्धिस्थानकी प्ररूपणामें प्रथम अनन्तभागवृद्धिस्थानमेंसे वृद्धिप्राप्त प्रक्षेपको कम करनेपर जघन्य स्थान होता है। पुनः सब जीवराशिका विरलन करके जघन्य स्थानको समखण्ड कर देनेपर एक एक अंकके प्रति प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। अब कम किये गये प्रक्षेपको भी इस विरलनके समान खण्ड कर देनेपर एक एक अंकके प्रति सब जीवराशिसे सकल प्रक्षेपको खण्डित कर एक खण्ड प्रमाण प्राप्त होता है। सकलप्रक्षेपके अनन्तवें भागप्रमाण इसकी पिशुल संज्ञा है। यहाँ एक अंक, अधस्तन सकल प्रक्षेप और एक पिशुलको भी ग्रहण करके प्रथम अनन्तभागवृद्धिस्थानको प्रतिराशि कर मिला देनेपर द्वितीय अनन्तभागवृद्धिस्थान उत्पन्न होता है।

संपहि जहण्णद्वाणं पेक्खिदूण विदियमणंतभागवद्धिद्वाणं दोहि पक्खेवेहि एगपिसुलेण च अहियं होदि त्ति। एदमधियपमाणं जहण्णद्वाणादो आणिज्जदे। तं जहा -- सब्वजीवरासिअद्धं विरलेदूण जहण्णद्वाणं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दो-दोपक्खेवपमाणं पावदि। पुणो एदेसिमुवरि एगपिसुलागमणमिच्छामो त्ति दुगुणसब्वजीवरासिं हेद्धा विरलेदूण उवरिमविरलणाए एगरूवधरिददोपक्खेवे घेत्तूण समखंडं कादूण दिण्णे विरलिदरूवं पडि एगेगपिसुलपमाणं पावदि।

पुणो एत्थ एगेगपिसुलं घेतूण उवरिमविरलणाए एगरूवधरिददोपक्खेवेसु दिण्णे हेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी दिस्सदि । एदस्स पिसुलस्स दोहि पक्खेवेहि सह आगमणे इच्छिज्जमाणे दुगुणं रूवाहियं सव्वजीवरासिं गंतूण जदि एगरूवहाणी लब्भदि तो सव्वजीवरासिअद्धम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठिदाए एगरूवस्स चदुब्भागे किंचूणं आगच्छदि । केत्तियो (\* ता प्रतौ 'केत्तिएणूणो' इति पाठः।) णूणो? एगरूवस्स अणंतिमभागेण । संपधि एदम्मि किंचुणेगरूवचदुब्भागे उवरिमविरलणाए सव्वजीवरासिदुभागमेत्तीए अवणिदे सेसं किंचूणं सव्वजीवरासिअद्धं भागहारो होदि । पुणो एदेण जहण्णट्ठाणे भागे हिदे एगपिसुलसहिदपक्खेवा आगच्छंति । एदेसु जहण्णट्ठाणस्सुवरि पक्खित्तेसु विदियमणंतभागवट्ठिदाणं होदि ।

अब जघन्य स्थानकी अपेक्षा द्वितीय अनन्तभागवृद्धिस्थान दो प्रक्षेपों और एक पिशुलसे अधिक होता है । जघन्य स्थानसे इस अधिकताके प्रमाणको लाते हैं । यथा -- सब जीवराशिके अर्ध भागका विरलन कर जघन्य स्थानको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकसे प्रति दो दो प्रक्षेपोंका प्रमाण प्राप्त होता है । अब इनके ऊपर चूँकि एक पिशुलका लाना अभीष्ट है, अतएव दुगुणी सब जीवराशिका नीचे विरलन कर उपरिम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त दो प्रक्षेपोंको ग्रहण कर समखण्ड कर देनेपर विरलित अंकके प्रति एक एक पिशुलका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर इनमेंसे एक एक पिशुलको ग्रहण कर उपरिम विरलनके एक अंकके प्रति दो प्रक्षेपोंमें देनेपर अधस्तन विरलन मात्र अध्वान जाकर एक अंककी हानि देखी जाती है । इस पिशुलके दो प्रक्षेपोंके साथ लानेकी इच्छा करनेपर एक अधिक दुगुणी सब जीवराशि जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जावेगी तो सब जीवराशिके आधेमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंकका कुछ कम चतुर्थ भाग आता है ।

शंका -- वह कितना कम है?

समाधान -- वह एक अनन्तर्वे भागसे कम है ।

अब एक अंकके कुछ कम इस चतुर्थ भागको सब जीवराशिके अर्ध भाग प्रमाण उपरिम विरलनमेंसे कम कर देनेपर शेष कुछ कम सब जीवराशिका अर्ध भाग भागहार होता है । इसका जघन्य स्थानमें भाग देनेपर एक पिशुल सहित दो प्रक्षेप आते हैं । इनको जघन्य स्थानके ऊपर मिलानेपर द्वितीय अनन्तभागवृद्धिस्थान होता है ।

संपहि तदियभागवद्धिद्वाणं भणिस्सामो । तं जहा -- विदियद्वाणम्मि एगपिसुले दोपक्खेवेसु च अवणिदेसु जहण्णद्वाणं होदि । तम्मि जीवरासिणा भागे हिदे एगपक्खेवो आगच्छदि । इमं पुध डुविय पुणो तेणेव सव्वजीवरासिणा दोपक्खेवेसु भागे हिदेसु दोपिसुलाणि आगच्छंति । पुणो एदाणि दो वि पिसुलाणि पुव्विल्लपक्खेवपस्से ठविय पुणो तेणेव भागहारेण एगपिसुले भागे हिदे एगं पिसुलापिसुलमागच्छदि । पुणो एगपक्खेवं दोपिसुलाणि एगं पिसुलापिसुलं च घेत्तूण विदियवद्धिद्वाणं पडिरासिय पक्खित्ते तदियं वद्धिद्वाणं होदि । एदं तदियवद्धिद्वाणं जहण्णद्वाणं पेक्खिदूण तीहि पक्खेवेहि तीहि पिसुलेहि एगेण पिसुलापिसुलेण च अहियं होदि ।

अब तृतीय अनन्तभागवृद्धिस्थानकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है -- द्वितीय स्थानमेंसे एक पिशुल और दो प्रक्षेपोंको कम करनेपर जघन्य स्थान होता है । उसमें सब जीवराशिका भाग देनेपर एक प्रक्षेप आता है । इसको पृथक् स्थापित करके उसी सब जीवराशिका दो प्रक्षेपोंमें भाग देनेपर दो पिशुल आते हैं । फिर इन दोनों ही पिशुलोंको पूर्व प्रक्षेपके पासमें स्थापित कर फिरसे उसी भागहारका एक पिशुलमें भाग देनेपर एक पिशुलापिशुल आता है । पुनः एक प्रक्षेप, दो पिशुल, दो पिशुल और एक पिशुलापिशुल ग्रहण कर द्वितीय वृद्धिस्थानको प्रतिराशि करके मिलानेपर तृतीय वृद्धिस्थान होता है । यह तृतीय वृद्धिस्थान जघन्य स्थानकी अपेक्षा तीन प्रक्षेपों, तीन पिशुलों और एक पिशुलापिशुलसे अधिक होता है ।

पुणो एदेसिं जहण्णद्वाणादो आणयणविधिं भणिस्सामो । तं जहा -- सव्वजीवरासितिभागं विरलिय जहण्णद्वाणं समखंडं करिय दिण्णे विरलिदरुवं पडि तिण्णि-तिण्णिपक्खेवपमाणं पावदि । पुणो एदिस्से (\* ता प्रतौ 'एदेसिं' इति पाठः ।) विरलणाए हेड्ढा सव्वजीवरासिं विरलेदूण उवरिमविरलणाए एगरुवधरिदं समखण्डं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रुवस्स तिण्णि-तिण्णिपिसुलपमाणं पावदि । पुणो एदिस्से विरलणाए हेड्ढा तिगुणं सव्वजीवरासिं विरलेदूण मज्झिमविरलणाए एगरुवधरिदं घेत्तूण समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रुवस्स एगेगपिसुलापिसुलपमाणं पावदि । पुणो तिगुणं सव्वजीवरासिं रुवाहियं गंतूण जदि एकरुवपरिहाणी लब्भदि तो सव्वरासिमेत्तमज्झिमविरलणम्मि किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरुवस्स तिभागो किंचूणो आगच्छदि । पुणो इमं सव्वजीवरासिम्मि सोहिय सुद्धसेसं रुवाहियं गंतूण जदि एगरुवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो

ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए अणंतभागहीणो एगरूवस्स तिभागो आगच्छदि । एदं सव्वजीवरासितिभागम्मि सोहिय सुद्धसेसेण जहण्णद्वाणे भागे हिदे तिण्णि पक्खेवाणि तिण्णि पिसुलाणि एगं पिसुलापिसुलं च आगच्छदि । पुणो एदम्मि जहण्णद्वाणं पडिरासिय पक्खित्ते तदियं वट्टिद्वाणमुप्पज्जदि । एदेण बीजपदेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तउव्वंकद्वाणाणं पुध पुध परूवणा कायव्वा जाव पढमअसंखेज्जभागवट्टीए हेट्टिमउव्वंकद्वाणे ति ।

अब इनकी जघन्य स्थानसे लानेकी विधि कहते हैं । वह इस प्रकार है -- सब जीवराशिके तृतीय भागका विरलन कर जघन्य स्थानको समखण्ड करके देनेपर विरलित अंकके प्रति तीन तीन प्रक्षेपोंका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर इस विरलनके नीचे सब जीवराशिका विरलन कर उपरिम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति तीन तीन पिशुलोंका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर इस विरलनके नीचे तिगुणी सब जीवराशिका विरलन कर मध्यम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको ग्रहण कर समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक पिशुलापिशुलका प्रमाण प्राप्त होता है । अब एक अधिक तिगुणी सब जीवराशि जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो सब जीवराशि प्रमाण मध्यम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंकका कुछ कम तृतीय भाग आता है । इसको सब जीवराशियोंमेंसे कम करके जो शेष रहे उससे एक अधिक जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंकका अनन्तर्वे भागसे हीन तृतीय भाग आता है । इसको सब जीवराशिके तृतीय भागमेंसे कम करके शेषका जघन्य स्थानमें भाग देनेपर तीन प्रक्षेप, तीन पिशुल और एक पिशुलापिशुल आता है । अब इसे जघन्य स्थानको प्रतिराशि कर उसमें मिला देनेपर तृतीय वृद्धिस्थान उत्पन्न होता है । इस बीजपदसे प्रथम असंख्यातभागवृद्धिके अधस्तन ऊर्वक स्थान तक अंगुलके असंख्यातवे भाग मात्र ऊर्वकस्थानोंकी पृथक् पृथक् प्ररूपणा करनी चाहिए ।

पुणो कंडयमेत्तद्वाणं गंतूण द्विचरिमअणंतभागवट्टिद्वाणस्स भागहारपरूवणा कीरदे । तं जहा -- तत्थ एगकंडयमेत्तपक्खेवा अत्थि, एगादिएगुत्तरकमेण पक्खेयवुट्टिदंसणादो । रूवूणकंडयस्स संकलणमेत्तपिसुलाणि अत्थि, पढममणंतभागवुट्टिद्वाणं मोत्तूण उवरि संकलणागारेण पिसुलाणं वट्टिदंसणादो । दुरुवूणकंडयस्स

संकलणासंकलणमेत्तपिसुलापिसुलाणि अत्थि, तदियअणंतभागवद्धिद्वाणप्पहुडि उवरि  
संकलणासंकलणरूवेण पिसुलापिसुलाणं वद्धिदंसणादो। तिरूवूणकंडयस्स  
तदियवारसंकलणमेत्तचुण्णियाओ अत्थि, चउद्वाणप्पहुडि तदियवारसंकलणाकमेण चुण्णियाणं  
वद्धिदंसणादो। एवं कंडयगच्छो एगादिएगुत्तरकमेण हायमाणो गच्छदि जाव एगरूवावसेसो ति।  
पक्खेवा एगादिकमेण, पिसुलाणि संकलणसरूवेण, पिसुलापिसुलाणि विदियवारसंकलणसरूवेण,  
चुण्णियाओ तिण्णिवारसंकलणसरूवेण, चुण्णाचुण्णियाओ चउत्थवारसंकलणसरूवेण, भिण्णाओ  
पंचमवारसंकलणसरूवेण, भिण्णाभिण्णाओ छट्टुवारसंकलणसरूवेण गच्छंति। एवं छिण्ण-  
छिण्णाछिण्ण-तुट्ट-तुट्टतुट्ट- दलिद-दलिददलिदादीणं पि णेदव्वं। एदेसिमाणयणसुत्तं --

अब काण्डकप्रमाण अध्वान जाकर स्थित अन्तिम अनन्तभागवृद्धिस्थानके भागहारकी  
प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- उसमें एक काण्डकप्रमाण प्रक्षेप है, क्योंकि, एकको  
आदि लेकर उत्तरोत्तर एक एक अधिक क्रमसे प्रक्षेपकी वृद्धि देखी जाती है। एक कम काण्डकके  
संकलन प्रमाण पिशुल हैं, क्योंकि, प्रथम अनन्तभागवृद्धिस्थानको छोड़कर आगे संकलनके  
आकारसे पिशुलोंकी वृद्धि देखी जाती है। दो कम काण्डकके दो बार संकलन प्रमाण  
पिशुलापिशुल हैं, क्योंकि, तृतीय अनन्तभागवृद्धिस्थानसे लेकर आगे दो बार संकलन स्वरूपसे  
पिशुलापिशुलोंकी वृद्धि देखी जाती है। तीन कम काण्डकके तीन बार संकलनप्रमाण चूर्णिकाएँ  
हैं, क्योंकि, चतुर्थ स्थानसे लेकर तीन बार संकलनके क्रमसे चूर्णिकाओंकी वृद्धि देखी जाती है।  
इस प्रकार काण्डकगच्छ एकको आदि लेकर एक एक अधिक क्रमसे हीन होता हुआ एक रूप  
शेष रहने तक जाता है। प्रक्षेप एक आदि क्रमसे, पिशुल संकलन स्वरूपसे, पिशुलापिशुल  
द्वितीय बार संकलन स्वरूपसे, चूर्णिकाएँ तीन बार संकलन स्वरूपसे, चूर्णाचूर्णिकाएँ चतुर्थ बार  
संकलन स्वरूपसे, भिन्न पंचम बार संकलन स्वरूपसे तथा भिन्नाभिन्न छठे बार संकलन  
स्वरूपसे जाने जाते हैं। इसी प्रकार छिन्न, छिन्नाछिन्न, त्रुटित, त्रुटितात्रुटित, दलित और  
दलितादलित आदिकोंमें भी ले जाना चाहिए। इनके लानेका सूत्र --

एकोत्तरपदवृद्धो रूपाद्यैर्भाजितश्च पदवृद्धैः।

गच्छत्सम्पातफलं \*समाहतस्सन्निपातफलम्\*\* ॥२॥

(\* अ आ प्रत्योः 'समाहितः' इति पाठः।) (\*\* ष. खं. पु. ५, पृ. १९३. क. पा. २, पृ. ३००)

एक एक अधिक होकर पद प्रमाण वृद्धिगत गच्छको पद प्रमाण वृद्धिको प्राप्त हुए एक आदि अंकोंसे भाजित करनेपर सम्पातफल अर्थात् एक संयोगी भंगका प्रमाण आता है। इनको परस्पर गुणित करनेसे सन्निपातफल अर्थात् द्विसंयोगी आदि भंग आते हैं।

संपहि एदेसिं सव्वेसिं पि जहण्णद्वाणादो आणयणविहाणं वुच्चदे। तं जहा -- पढमकंडणोवट्टिदसव्वजीवरासिं विरलिय जहण्णद्वाणं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स कंडयमेत्ता सकलपक्खेवा पावेंति। पुणो एदिस्से विरलणाए एगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स रूवूणकंडयस्स संकलणमेत्तपिसुलाणि पावेंति। पुणो एदिस्से विदियविरलणाए हेड्ढा रूवूणकंडयसंकलणगुणिदसव्वजीवरासिं दुरुवूणकंडयस्स विदियवारसंकलणाए ओवट्टिय लद्धं विरलेदूण विदियविरलणाए एगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स दुरुवूणकंडयस्स विदियवारसंकलणामेत्तपिसुलापिसुलाणि पावेंति। एवं कंडयमेत्ताओ विरलणाओ जाणिदूण विरलेदव्वाओ। तत्थ चउत्थादिविरलणाओ अप्पहाणाओ त्ति छोद्विदूण तदिय-विदिय-पढमाणं पक्खेवंसाणमाणयणं वुच्चदे। तं जहा -- रूवाहियतदियविरलणमेत्तद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स किंचूण-बे-तिभागो आगच्छदि। तम्मि मज्झिमविरलणाए अवणिय रूवाहियं कारुण ताए फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धं किंचूणरूवस्सद्धं उवरिमविरलणाए अवणिदाए जहण्णद्वाणे भागे हिदे लद्धं जहण्णद्वाणं पडिरासिय पक्खित्ते चत्तारिअंकस्स हेड्ढिमउव्वंकद्वाणं होदि। पुणो तं द्वाणमसंखेज्जेहि लोगेहि ओवट्टिय तम्मि चेव पडिरासीकदे पक्खित्ते असंखेज्जभागवट्टिद्वाणं होदि।

अब इन सभीके जघन्य स्थानसे लानेकी विधिका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है -- प्रथम काण्डकसे अपवर्तित सब जीवराशिका विरलन करके जघन्य स्थानको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति काण्डक प्रमाण सकलप्रक्षेप प्राप्त होते हैं। फिर इस विरलनके नीचे एक कम काण्डकके अर्ध भागसे अपवर्तित सब जीवराशिका विरलन कर उपरिम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक कम काण्डकके संकलन प्रमाण पिशुल प्राप्त होते हैं। फिर इस द्वितीय विरलनके नीचे एक कम काण्डकके संतुलनसे गुणित सब जीवराशिको दो कम काण्डकके द्वितीय बार संकलनसे अपवर्तित कर

लब्धका विरलन करके द्वितीय विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति दो कम काण्डकके द्वितीय बार संकलन प्रमाण पिशुलापिशुल प्राप्त होते हैं। इस प्रकार काण्डक प्रमाण विरलन राशियोंको जानकरके विरलन करना चाहिए। उनमें चतुर्थ आदि विरलनराशियाँ चूँकि अप्रधान हैं, अतएव उनको छोड़कर तृतीय, द्वितीय और प्रथम प्रक्षेपांशोंको लानेकी विधि कहते हैं। वह इस प्रकार है -- एक अधिक तृतीय विरलन मात्र अध्वान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंकके कुछ कम दो तृतीय भाग आते हैं। उनको मध्यम विरलनमेंसे कम कर एक अधिक करके उससे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करके प्राप्त हुए एक रूपके कुछ कम अर्ध भागको उपरिम विरलनमेंसे कम कर देनेपर जघन्य स्थानमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसे जघन्य स्थानको प्रतिराशि करके मिलानेपर चतुरंकके नीचेका ऊर्वक स्थान होता है। फिर उस स्थानको असंख्यात लोकोसे अपवर्तित कर प्रतिराशीकृत उसीमें मिलानेपर असंख्यातभागवृद्धिस्थान होता है।

संपहि जहण्णद्वाणादो असंखेज्जभागवट्ठिद्वाणं उप्पाइज्जदे। तं जहा -- चत्तारिअंकदो हेट्ठिमुव्वंकम्हि कंडयमेत्तअणंतभागवट्ठिपक्खेवेसु रूवूणकंडयस्स संकलणमेत्तपिसुलेसु दुरुवूणकंडय-विदियवारसंकलणमेत्तपिसुलापिसुलेसु सेसचुणियभागेसु च अवणिदेसु जहण्णद्वाणं होदि। पुणो असंखेज्जलोगे विरलिय जहण्णद्वाणं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स असंखेज्जभागवट्ठिपक्खेवो होदि। पुणो पुव्वमवणिदकंडयमेत्तअणंतभागवट्ठिपक्खेवादिं पि समखंडं कादूण दिण्णे जहासरूवेण पावदि। पुणो एदस्स एगभागहारेणागमणकिरियं कस्सामो। तं जहा -- असंखेज्जलोगे विरलिय जहण्णद्वाणं समखंडं कादूण दिण्णे जहण्णद्वाणस्स असंखेज्जदिभागो एक्केक्कस्स रूवस्स पावदि। पुणो असंखेज्जेहि लोगेहि ओवट्ठिदसव्वजीवरासिं (\* अ प्रतौ 'जीवरासिंहि' इति पाठः।) हेट्ठा विरलिय उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स एगेअणंतभागवट्ठिपक्खेवो पावदि। पुणो एगकंडएणोवट्ठियं विरलिय उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स कंडयमेत्तअणंतभागवट्ठिपक्खेवा पावति। पुणो सेसाणं पि आगमणद्वं भागहारम्मि अणंतिमभागो असंखेज्जदिभागो च अवणेदव्वो। (\*अ प्रतौ 'एव' इति पाठः।) एदमुवरिमरूवधरिदेसु दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणं पमाणं वुच्चदे। तं जहा -- रूवाहियविरलणमेत्तद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो

उवरिमविरलणम्हि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स अणंतिमभागो आगच्छदि । तं उवरिमविरलणाए अवणिय सेसेण जहण्णट्ठाणे भागे हिदे लद्धे (\* अ आ प्रत्योः 'पडिरासीय' इति पाठः ।) पडिरासीकयजहण्णट्ठाणस्सुवरि पक्खित्ते असंखेज्जभागवट्टिट्ठाणं होदि । संपहि एदस्सुवरि अणंतभागवट्टीणं कंडयमेत्ताणमुप्पायणविहाणं जाणिदूण वत्तव्वं ।

अब जघन्य स्थानसे असंख्यातभागवृद्धिस्थानको उत्पन्न कराते हैं । यथा -- चतुरंकसे नीचेके ऊर्वकमेंसे काण्डक प्रमाण अनन्तभागवृद्धिप्रक्षेपों, एक कम काण्डकके संकलन प्रमाण पिशुलों, दो कम काण्डकके द्वितीय वार संकलन प्रमाण पिशुलापिशुलों तथा शेष चूर्णिकभागोंको कम करने पर जघन्य स्थान होता है । फिर असंख्यात लोकोंका विरलन कर जघन्य स्थानको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति असंख्यात भागवृद्धिका प्रक्षेप होता है । फिर पहले कम किये गये काण्डक प्रमाण अनन्तभागवृद्धिप्रक्षेप आदिको भी समखण्ड करके देनेपर यथास्वरूपसे प्राप्त होता है । अब इसके एक भागहार रूपसे लानेकी क्रिया करते हैं । वह इस प्रकार है -- असंख्यात लोकोंका विरलन कर जघन्य स्थानको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जघन्य स्थानका असंख्यातवाँ भाग प्राप्त होता है । फिर असंख्यात लोकोंसे अपवर्तित सब जीवराशिका नीचे विरलन कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक अनन्तभागवृद्धिप्रक्षेप प्राप्त होता है । फिर एक काण्डकसे अपवर्तित उसे विरलित कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति काण्डक प्रमाण अनन्तभागवृद्धिप्रक्षेप प्राप्त होते हैं । फिर शेष रहे उनको भी लानेके लिए भागहारमेंसे अनन्तवें भाग व असंख्यातवें भागको भी कम करना चाहिए । इसे उपरिम विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्योंमें देकर समकरण करनेपर हीन अंकोंका प्रमाण बतलाते हैं । वह इस प्रकार है । -- एक अधिक विरलन मात्र अध्वान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंकका अनन्तवाँ भाग आता है । उसको उपरिम विरलनमेंसे कम कर शेषका जघन्य स्थानमें भाग देनेपर लब्धको प्रतिराशिकृत जघन्य स्थानके ऊपर मिलानेपर असंख्यातभागवृद्धिस्थान होता है । अब इसके आगे काण्डकप्रमाण अनन्तभागवृद्धियोंके उत्पन्न करानेकी विधि जानकर कहना चाहिए ।

संपहि बिदियअसंखेज्जभागवड्डिउप्पायणविहाणं वुच्चदे। तं जहा -- तदो हेड्डिमउव्वंकस्सुवरि असंखेज्जभागवड्डि-अणंतभागवड्डिपक्खेवेसु च अवणिदेसु सेसं जहण्णट्ठाणं होदि। तम्मि असंखेज्जेहि लोगेहि भागे हिदे असंखेज्जभागवड्डिपक्खेवो आगच्छदि। एदं पुध ड्ढविय अवणिदपक्खेवेसु अणंतभागवड्डिपक्खेवो अप्पहाणो ति ते छोड्डिय असंखेज्जभागवड्डिपक्खेवे असंखेज्जलोगेण खंडिदे तत्थ एगखंडमसंखेज्जभागवड्डिपिसुलं होदि। एदं पिसुलं पुव्विल्लपक्खेवं च घेतूण चरिमउव्वंकं पडिरासिय पक्खित्ते बिदियमसंखेज्जभागवड्डिट्ठाणमुप्पज्जदि। पुणो एदं जहण्णट्ठाणादो दोहि असंखेज्जवड्डिपक्खेवेहि एगपिसुलेण च अहियं होदि। एदं अहियदव्वं जहण्णट्ठाणस्स केवड्डियो भागो होदि ति पुच्छिदे उच्चदे -- असंखेज्जलोगे विरलिय जहण्णट्ठाणे समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स एगो असंखेज्जवड्डिपक्खेवो पावदि। पुणो दोपक्खेवे इच्छामो ति पुव्विल्लभागहारस्स अद्धेण भागे हिदे रूवं पडि दो-पक्खेवपमाणं पावदि। पुणो एदाणमुवरि एगअसंखेज्जभागवड्डिपिसुलागमणमिच्छामो ति पुव्विल्लविरलणाए (\*अ आ प्रत्योः 'विरलणा', ता प्रतौ 'विरलणा(ए)' इति पाठः।) हेड्डा दुगुणअसंखेज्जलोगे विरलिय उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे एगेगपिसुलपमाणं पावदि। पुणो एदं विरलणं रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवड्डिदाए एगरूवस्स चदुब्भागं किंचूणमागच्छदि। पुणो एदम्मि उवरिमविरलणाए सोहिदे सुद्धसेसं भागहारो होदि। एदेण जहण्णट्ठाणे भागे हिदे दोपक्खेवा एगपिसुलं च लब्भदि। पुणो एदम्मि जहण्णट्ठाणे पडिरासिय पक्खित्ते बिदियमसंखेज्जभागवड्डिट्ठाणमुप्पज्जदि। पुणो एदस्सुवरि सव्वजीवरासी भागहारो होदूण ताव गच्छदि जाव कंडयमेत्तअणंतभागवड्डिट्ठाणाणं चरिमउव्वंकट्ठाणे ति।

अब द्वितीय असंख्यातभागवृद्धिस्थानके उत्पन्न करानेकी विधि कहते हैं। वह इस प्रकार है -- उससे अधस्तन ऊर्वकके ऊपर असंख्यातभागवृद्धि और अनन्तभागवृद्धि प्रक्षेपोंको कम करनेपर शेष जघन्य स्थान होता है। उसमें असंख्यात लोकोंका भाग देनेपर असंख्यातभागवृद्धिप्रक्षेप प्राप्त होता है। इसको पृथक् स्थापित कर फिर कम किये गये प्रक्षेपोंमें चूँकि अनन्त भागवृद्धिप्रक्षेप अप्रधान हैं, अतएव उनको छोड़कर असंख्यातभागवृद्धिप्रक्षेपको असंख्यात लोकसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड असंख्यातभागवृद्धिपिशुल होता है। इस पिशुल और पूर्वके प्रक्षेपको ग्रहण कर अन्तिम ऊर्वकको प्रतिराशि करके मिलानेपर द्वितीय

असंख्यातभागवृद्धिस्थान उत्पन्न होता है। यह जघन्य स्थानकी अपेक्षा दो असंख्यातभागवृद्धिप्रक्षेपों और एक पिशुलसे अधिक होता है।

शंका -- यह अधिक द्रव्य जघन्य स्थानके कितनेवें भाग प्रमाण होता है?

समाधान -- ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि असंख्यात लोकोंका विरलन कर जघन्य स्थानको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक असंख्यातवृद्धि प्रक्षेप प्राप्त होता है। पुनः चूँकि दो प्रक्षेप अभीष्ट हैं अतः पूर्वके भागहारके अर्ध भागका भाग देनेपर एक अंकके प्रति दो दो प्रक्षेपोंका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः इनके ऊपर एक असंख्यातभागवृद्धि पिशुलका लाना अभीष्ट है, अतः पूर्व विरलनके नीचे दुगुणे असंख्यात लोकोंका विरलन कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक पिशुलका प्रमाण प्राप्त होता है। फिर एक अधिक इस विरलन प्रमाण जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंकका कुछ कम चतुर्थ भाग आता है। फिर इसको उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर जो शेष रहे वह भागहार होता है। इसका जघन्य स्थानमें भाग देनेपर दो प्रक्षेप और एक पिशुल प्राप्त होता है। इसको जघन्य स्थानमें प्रतिराशि करके मिलानेपर द्वितीय असंख्यातभागवृद्धिस्थान उत्पन्न होता है। फिर इसके आगे काण्डकप्रमाण अनन्तभागवृद्धिस्थानोंके अन्तिम ऊर्वकस्थान तक सब जीवराशि भागहार होकर जाती है।

पुणो एदस्सुवरिमतदियअसंखेज्जभागवड्ढिद्वाणे (\* आ ता प्रतिषु 'वड्ढिद्वाणेहि' इति पाठः।) भण्णमाणे चरिमउव्वंकस्सुवरिमअसंखेज्जभागवड्ढिपक्खेवे अवणिय पुध ड्विदे जहण्णद्वाणं होदि, अप्पहाणीकयअणंतभागवड्ढिपक्खेवत्तादो। पुणो असंखेज्जलोगेहि जहण्णद्वाणे भागे हिदे एगो पक्खेवो आगच्छदि। इमं पुध ड्विय पुणो पुव्विल्लअसंखेज्जलोगेहि चेव दोसु पक्खेवेसु अवहिरिदेसु दो (\* अ आ प्रत्योः 'दो' इति पदं नोपलभ्यते, ता प्रतौ तूपलभ्यते।) असंखेज्जभागवड्ढिपिसुलाणि आगच्छंति। एदे पुध ड्विय पुणो तेणेव भागहारेण असंखेज्जभागवड्ढिपिसुले खंडिदे एगं पिसुलापिसुलमागच्छदि। पुणो एगमसंखेज्जभागवड्ढिपक्खेवं तिस्से वड्ढीए दोपिसुलाणि एगं पिसुलापिसुलं च घेत्तूण चरिमउव्वंकं पडिरासिय पक्खित्ते तदियअसंखेज्जभागवड्ढिद्वाणं होदि। तदियअसंखेज्जभागवड्ढिद्वाणं गाम जहण्णद्वाणादो तीहि असंखेज्जभागवड्ढिपक्खेवेहि तीहि (\* अ आ ता प्रतिषु 'तेहि' इति पाठः।)

असंखेज्जभागवद्धिपिसुलेहि एगेण पिसुलापिसुलेण च अधियं होदि । (\* अ आ ता प्रतिषु 'एदमादियदब्बं' इति पाठः।) पुणो एदमहियदब्बं जहण्णट्ठाणादो उप्पाइज्जदे । तं जहा -- असंखेज्जालोगाणं तिभागं (\* अ आ प्रत्योः '--लोगाणंतिभागं' इति पाठः।) विरलेदूण जहण्णट्ठाणं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स तिण्णि-तिण्णि पक्खेवपमाणं पावदि । पुणो एदिस्से विरलणाए हेट्ठा असंखेज्जलोगे विरलिय (\*अ आ प्रत्योः 'धरिदे' इति पाठः।) एगरूवधरिदतिण्णि पक्खेवे घेतूण समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स तिण्णि तिण्णि पिसुलाणि पावंति । पुणो एदिस्से बिदियविरलणाए हेट्ठा तिगुणअसंखेज्जलोगे विरलिय उवरिमएगेगरूवधरिद(\* अ आ प्रत्योः '--धरिदं' इति पाठः।) तिण्णि-तिण्णिपिसुलाणि घेतूण समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स एगेगपिसुलापिसुलपमाणं पावदि । पुणो एस विरलणं रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो मज्झिमविरलणम्मि किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए किंचूणो एगरूवस्स तिभागो आगच्छदि । पुणो एदं मज्झिमविरलणाए सोहिय सुद्धसेसं रूवाहियमेत्तद्धानं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठिदाए एगरूवस्स तिभागो किंचूणो आगच्छदि । पुणो एदमुवरिमविरलणम्मि सोहिय जहण्णट्ठाणे भागे हिदे तिण्णिपक्खेवा तिण्णिपिसुलाणि एगं पिसुलापिसुलं च आगच्छदि । पुणो एदम्मि जहण्णट्ठाणस्सुवरि पक्खित्ते तदियमसंखेज्जभागवद्धिट्ठाणं होदि । एदेण बीजपदेण उवरि वि णेयव्वं जाव अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणमसंखेज्जभागवद्धिट्ठाणाणं चरिमअसंखेज्जभागवद्धिट्ठाणे ति ।

पुनः इसके ऊपरके तृतीय असंख्यातभागवृद्धिस्थानका कथन करनेपर अन्तिम ऊर्वकके ऊपरके असंख्यातभागवृद्धिप्रक्षेपको कम करके पृथक् स्थापित करनेपर जघन्य स्थान होता है, क्योंकि, यहाँ अनन्तभागवृद्धिप्रक्षेपको प्रधान नहीं किया गया है । फिर असंख्यात लोकोंका जघन्य स्थानमें भाग देनेपर एक प्रक्षेप आता है । इसको पृथक् स्थापित करके पूर्वके असंख्यात लोकोंसे ही दो प्रक्षेपोंके अपहृत करनेपर दो असंख्यातभागवृद्धिपिशुल आते हैं । इनको पृथक् स्थापित करके उसी भागहारसे असंख्यातभागवृद्धिपिशुलको खण्डित करनेपर एक पिशुलापिशुल आता है । अब एक असंख्यातभागवृद्धिप्रक्षेप, उसी वृद्धिके दो पिशुलों और एक पिशुलापिशुलको ग्रहण कर अन्तिम ऊर्वकको प्रतिराशि करके मिलानेपर तृतीय असंख्यातभागवृद्धिस्थान होता है । तृतीय असंख्यातभागवृद्धिस्थान जघन्य स्थानकी अपेक्षा तीन असंख्यातभागवृद्धिप्रक्षेपों, तीन

असंख्यातभागवृद्धिपिशुलों और एक पिशुलापिशुलसे अधिक है। अब जघन्य स्थानसे इस अधिक द्रव्यको उत्पन्न कराते हैं। यथा -- असंख्यात लोकोंके तृतीय भागका विरलन करके जघन्य स्थानको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति तीन तीन प्रक्षेपोंका प्रमाण प्राप्त होता है। फिर इस विरलनके नीचे असंख्यात लोकोंका विरलन कर एक अंकके प्रति प्राप्त तीन प्रक्षेपोंको ग्रहण कर समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति तीन तीन पिशुल प्राप्त होते हैं। फिर इस द्वितीय विरलनके नीचे तिगुणे असंख्यात लोकोंका विरलन करके उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त तीन तीन पिशुलोंको ग्रहण कर समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक पिशुलापिशुलका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः एक अधिक इस विरलन प्रमाण जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो मध्यम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंकका कुछ कम एक तृतीय भाग आता है। फिर इसको मध्यम विरलनमेंसे कम करके जो शेष रहे उससे एक अधिक मात्र अध्वान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी; इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित करनेपर एक अंकका कुछ कम तृतीय भाग आता है। फिर इसको उपरिम विरलनमेंसे कम करके जघन्य स्थानमें भाग देनेपर तीन प्रक्षेप, तीन पिशुल और एक पिशुलापिशुल आता है। पुनः इसको जघन्य स्थानके ऊपर मिला देनेपर तृतीय असंख्यातभागवृद्धिस्थान होता है। इस बीजपदसे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यातभागवृद्धिस्थानोंमें अन्तिम असंख्यातभागवृद्धिस्थान तक ले जाना चाहिए।

पुणो चरिमअसंखेज्जभागवड्ढिद्वाणस्स भागहारो उच्चदो। तं जहा -- अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण असंखेज्जलोगमोवट्टिय किंचूणं कादूण जहण्णद्वाणे भागे हिदे जं भागलद्धं तम्हि कंडयमेत्तअसंखेज्जभागवड्ढिपक्खेवा रूवूणकंडयस्स संकलणमेत्ताणि असंखेज्जभागवड्ढिपिसुलाणि दुरुवूणकंडयस्स संकलणासंकलणमेत्तअसंखेज्जभागवड्ढिपिसुलापिसुलाणि सेसचुण्णाणि च आगच्छंति। एदं सव्वं घेतूण (\* अ प्रतौ 'एदं सुद्धं घेतूण' इति पाठः।) जहण्णद्वाणस्सुवरि पक्खित्ते चरिमअसंखेज्जभागवड्ढिद्वाणं उप्पज्जदि। पुणो एदस्सुवरि सव्वजीवरासी भागहारो होदूण कंडयमेत्तअणंतभागवड्ढिद्वाणाणि गच्छंति (\* आ प्रतौ 'आगच्छंति' इति पाठः।) जाव चरिमअणंतभागवड्ढिद्वाणे ति।

अब अन्तिम असंख्यातभागवृद्धिस्थानको कहते हैं। वह इस प्रकार है -- अंगुलके असंख्यातवें भागसे असंख्यात लोकोंको अपवर्तित कर कुछ कम करके जघन्य स्थानमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसमें काण्डकप्रमाण असंख्यातभागवृद्धिप्रक्षेप, एक कम काण्डकके संकलनप्रमाण असंख्यातभागवृद्धिपिशुल दो कम काण्डकके संकलनासंकलनप्रमाण असंख्यातभागवृद्धिपिशुलापिशुल और शेष चूर्ण आते हैं। इस सबको ग्रहण करके जघन्य स्थानके ऊपर मिलानेपर अन्तिम असंख्यातभागवृद्धिस्थान उत्पन्न होता है। पुनः इसके आगे सब जीवराशि भागहार होकर अन्तिम अनन्तभागवृद्धिस्थान तक काण्डकप्रमाण अनन्तभागवृद्धिस्थान जाते हैं।

पुणो एदस्सुवरि पढमसंखेज्जभागवड्ढिद्वाणं होदि। तम्मि उप्पाइज्जमाणे चरिमअणंतभागवड्ढिद्वाणस्सुवरि वड्ढिददव्वे अवणिदे जहण्णद्वाणं होदि। पुणो उक्कस्ससंखेज्जं विरलेदूण जहण्णद्वाणं समखंडं कादूण दिण्णे संखेज्जभागवड्ढिपक्खेवो आगच्छदि। अवणिदपक्खेवेसु संखेज्जरूवेहि ओवट्ठिदेसु (\* प्रतिषु 'अद्ध--' इति पाठः।) लद्धदव्वमप्पहाणं, संखेज्जभागवड्ढिपक्खेवस्स (\* प्रतिषु '-- वस्स अणंत असंखे -- ' इति पाठः।) असंखेज्जभागत्तादो। पुणो तम्मि आणिज्जमाणे हेद्वा असंखेज्जलोगे विरलिय संखेज्जभागवड्ढिपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स असंखेज्जभागवड्ढिपक्खेवस्स संखेज्जदिभागो पावदि। पुणो सगलपक्खेवमिच्छामो ति असंखेज्जलोगे उक्कस्ससंखेज्जेणोवट्ठिय विरलेदूण संखेज्जभागवड्ढिपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे विरलणरूवं पडि असंखेज्जभागवड्ढिसगलपक्खेवो पावदि। पुणो कंडयमेत्तअसंखेज्जभागवड्ढिपक्खेवे इच्छामो ति एगकंडएण इदानींतणविरलिदरासिमोवट्ठिय विरलेदूण संखेज्जभागवड्ढिपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे कंडयमेत्ता असंखेज्जभागवड्ढिपक्खेवा (\* प्रतिषु 'विरलणरूवं ति' इति पाठः।) विरलणरूवं पडि पावेंति। पुणो कंडयसहिदकंडयवग्गमेत्तअणंतभागवड्ढिपक्खेवे इच्छामो ति कंडयगुणिसव्वजीवरासिं विरलिय कंडयमेत्तअसंखेज्जभागवड्ढिपक्खेवेसु समखंडं कादूण दिण्णेषु एक्केक्कस्स रूवस्स अणंतभागवड्ढिपक्खेवस्स असंखेज्जदिभागो पावदि। पुणो सगलमणंतभागवड्ढिपक्खेवमिच्छामो ति असंखेज्जलोगेहि कंडयगुणिसव्वजीवरासिमोवट्ठिय विरलेदूण मज्झिमविरलणाए एगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि सगलपक्खेवपमाणं पावदि। पुणो कंडयसहिदकंडयवग्गेण

ओवट्टिय विरलेदूण मज्झिमविरलणाए एगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे सकंडय-कंडयवग्ग(\* म प्रति पाठोऽयम्। अ आ प्रत्योः 'समकंदयवग्ग', ता प्रतौ म प्रतिसमः पाठः।)मेत्तअणंतभागवट्टिपक्खेवा होंति। पुणो समकरणं कादूण अवणयणरूवाणं पमाणं वुच्चदे -- हेट्टिमविरलणं रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवहाणी लब्भदि तो मज्झिमविरलणमिहे केवडियरूवपरिहाणिं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स अणंतिमभागो आगच्छदि। एदं मज्झिमविरलणाए सोहिय सुद्धसेसं रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो लब्भदि। एदमुक्कस्ससंखेज्जमिहे सोहिय (\* अ प्रतौ 'संखेज्जं सोहिय' इति पाठः।) सेसेण जहण्णट्ठाणे भागे हिदे एगो संखेज्जभागवट्टिपक्खेवो कंडयमेत्ता(\* अ आ प्रत्योः 'कंडयमेत्तो' इति पाठः।) असंखेज्जभागवट्टिपक्खेवा सकंडय-कंडय-वग्गमेत्ता अणंतभागवट्टिपक्खेवा च लब्भंति। पुणो एत्तियदव्वं जहण्णट्ठाणं पडिरासिय पक्खित्ते पढमसंखेज्जभागवट्टिट्ठाणमुप्पज्जदि।

फिर इसके आगे प्रथम संख्यातभागवृद्धिस्थान होता है। इसको उत्पन्न करानेमें अन्तिम अनन्तभागवृद्धिस्थानके ऊपर वृद्धिप्राप्त द्रव्यको कम करनेपर जघन्य स्थान होता है। अब उत्कृष्ट संख्यातका विरलन करके जघन्य स्थानको समखण्ड करके देनेपर संख्यातभागवृद्धिप्रक्षेप आता है। कम किये हुए प्रक्षेपोंको संख्यात अंकोंसे अपवर्तित करनेपर जो द्रव्य लब्ध हो वह अप्रधान है, क्योंकि, वह संख्यातभागवृद्धि प्रक्षेपके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसको लाते समय नीचे असंख्यात लोकोंका विरलन कर संख्यातभागवृद्धिप्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति असंख्यातभागवृद्धिप्रक्षेपका संख्यातवाँ भाग प्राप्त होता है। अब चूँकि सकल प्रक्षेपक लाना अभीष्ट है, अतः असंख्यात लोकोंको उत्कृष्ट संख्यातसे अपवर्तित कर लब्धका विरलन करके संख्यातभागवृद्धिप्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर विरलन अंकके प्रति असंख्यात भागवृद्धिका सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है। पुनः काण्डकप्रमाण असंख्यातभागवृद्धिप्रक्षेपोंकी चूँकि इच्छा है, अतएव एक काण्डकसे इस समयकी विरलित राशिको अपवर्तित करके विरलित कर संख्यातभागवृद्धिप्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर काण्डकप्रमाण असंख्यातभागवृद्धिप्रक्षेप विरलन अंकके प्रति प्राप्त होते हैं। पुनः काण्डकसहित काण्डकके वर्गप्रमाण अनन्तभागवृद्धिप्रक्षेपोंके लानेकी इच्छा है, अतएव काण्डकसे गुणित सब

जीवराशिका विरलन कर काण्डकप्रमाण असंख्यातभागवृद्धिप्रक्षेपोंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति अनन्तभागवृद्धिप्रदेशोंका असंख्यातवाँ भाग प्राप्त होता है। अब चूँकि अनन्तभागवृद्धिका सकल प्रक्षेप अभीष्ट है, अतएव असंख्यात लोकों द्वारा काण्डकसे गुणित सब जीवराशिका अपवर्तन कर विरलित करके मध्यम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति सकल प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। फिर उसे काण्डक सहित काण्डकके वर्गसे अपवर्तित करके विरलित कर मध्यम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर काण्डकके साथ काण्डकवर्गप्रमाण अनन्तभागवृद्धिप्रक्षेप होते हैं। फिर समीकरण करके हीन अंकोंका प्रमाण बतलाते हैं -- एक अधिक अधस्तन विरलन जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो मध्यम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि पायी जायेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंकका अनन्तवाँ भाग आता है। इसको मध्यम विरलनमेंसे कम करके जो शेष रहे उससे एक अधिक जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंकका असंख्यातवाँ भाग पाया जाता है। इसको उत्कृष्ट संख्यातमेंसे कम करके शेषका जघन्य स्थानमें भाग देनेपर एक संख्यातभागवृद्धिप्रक्षेप, काण्डकप्रमाण असंख्यात वृद्धिप्रक्षेप और काण्डकसहित काण्डकके वर्गप्रमाण अनन्तभागवृद्धिप्रक्षेप पाये जाते हैं। इतने द्रव्यको जघन्य स्थानको प्रतिराशि कर उसमें प्रथम असंख्यातभागवृद्धिस्थान उत्पन्न होता है।

एत्थ अणंतभागवद्धीए उव्वंकसण्णा, असंखेज्जभागवद्धी चत्तारिअंको, संखेज्जभागवद्धी पंचंको, संखेज्जगुणवद्धी छअंको, असंखेज्जगुणवद्धी सत्तंको, अणंतगुणवद्धी अट्ठंको ति घेतत्वो (\* उव्वंकं चउरंकं पण-छस्सत्तं अट्ठअंकं च। छव्वद्धीणं सण्णा कमसो संदिट्ठिकरणट्ठं।। गो. जी. ३२५) एदीए सण्णाए एगच्छट्ठाणसंदिट्ठी जोजेयव्वो।

यहाँ अनन्तभागवृद्धिकी ऊर्वक संज्ञा, असंख्यातभागवृद्धिकी चतुरंक, संख्यातभागवृद्धिकी पंचांक, संख्यातगुणवृद्धिकी षडंक, असंख्यातगुणवृद्धिकी सप्तांक और अनन्तगुणवृद्धिकी अष्टांक संज्ञा जानना चाहिए। इस संज्ञासे एक षट्स्थान सन्दृष्टिकी योजना करनी चाहिए।

संपहि पयदं उच्चदे -- अणंतभागवद्धिपक्खेवा जे एत्थ एगभागहारेण आणिदा सकंडय-कंडयवग्गमेत्ता ते सरिसा ण होंति (\* म प्रतो 'सरिसाणि होंति' इति पाठः।) अणंतभागवद्धि-

असंखेज्जभागवद्धिसरूवेण तेसिमवद्वाणादो। असंखेज्जभागवद्धिपक्खेवा वि सरिसा ण होंति, अण्णोण्णं पेक्खिदूण असंखेज्जभागवद्धीए अवद्वाणादो। तदो एगभागहारेण आणयणं ण जुज्जदे। अह पिसुल-पिसुलापिसुलादीणं पुध पुध भागहारे उप्पाइय भागहारपरिहाणिं कादूण एगभागहारेण आणिज्जंति ति णेदं पि घडदे, एगभवम्मि संखेज्जकिरियस्स पुरिसस्स असंखेज्जकिरियासु वावारविरोहादो। तदो पुव्वपरूविदभागहारपरूवणं ण घडदे ति? सच्चमेदं, किं तु असरिसत्तं पक्खेवाणमविवक्खिय सरिसा इदि बुद्धीए संकप्पिय भागहारपरूवणा कीरदे। अलीयवयणेण कधं ण कम्मबंधो (\* अ प्रतौ 'क्कमबंधो' इति पाठः।)? णेदमलीयवयणं, एयंतग्गहाभावादो। ण च एदेण वयणेण मिच्छाणाणमुप्पाइज्जदे, असंखेज्जेहि वासेहि पुध पुध तेरासियं काऊण उप्पाइदभागहारेहिंतो समुप्पण्णणसमाणसुदणाणुप्पत्तीदो। ण च अंतेवासीणमाइरिया सब्वसुत्तत्थं भणंति, तहाविहसत्तीए अभावादो। कधं पुण सयलसुदणाणुप्पत्ती? ण एस दोसो, अणुत्तोवग्गह-ईहावाय-धारणाहि तदुप्पत्तीदो। उत्तं च --

अब यहाँ प्रकृतका कथन करते हैं --

शंका -- काण्डक सहित काण्डकके वर्गप्रमाण जो अनन्तभागवृद्धिप्रक्षेप एक भागहारके द्वारा लाये गये हैं वे सदृश नहीं हैं, क्योंकि, उनका अनन्तभागवृद्धि और असंख्यातभागवृद्धि स्वरूपसे अवस्थान है। असंख्यातभागवृद्धिके प्रक्षेप भी सदृश नहीं होते, क्योंकि, उनका परस्परकी अपेक्षा असंख्यातभागवृद्धिस्वरूपसे अवस्थान है, इसीलिए उनका एक भागहारसे लाना योग्य नहीं है। यदि कहा जाय कि पिशुल व पिशुलापिशुल आदिकोंके पृथक् पृथक् भागहारोंको उत्पन्न कराकर भागहारकी हानि कराकर एक भागहारके द्वारा वे लाये जा सकते हैं तो यह भी घटित नहीं होता है, क्योंकि, संख्यात क्रियायुक्त पुरुषके असंख्यात क्रियाओंमें व्यापारका विरोध है। इस कारण पूर्वप्ररूपित भागहारकी प्ररूपणा घटित नहीं होती?

समाधान -- यह सत्य है, किन्तु प्रक्षेपोंकी असमानताकी विवक्षा न कर बुद्धिसे उन्हें सदृश कल्पित कर भागहारकी प्ररूपणा की जा रही है।

शंका -- इस असत्यभाषणसे कर्मबन्ध कैसे न होगा?

समाधान -- यह असत्यभाषण नहीं है, क्योंकि, इसमें एकान्तका अभाव है। इस वचनसे मिथ्याज्ञान भी नहीं उत्पन्न कराया जा रहा है, क्योंकि, उसके द्वारा असंख्यात वर्षोंसे पृथक् पृथक् त्रैराशिक करके उत्पन्न कराये गये भागहारोंसे उत्पन्न ज्ञानके समान श्रुतज्ञान उत्पन्न

होता है। दूसरे, आचार्य शिष्योंके लिए समस्त सूत्रार्थको नहीं कहते हैं, क्योंकि, वैसी सामर्थ्य नहीं है।

शंका -- तो फिर पूर्ण श्रुतज्ञान कैसे उत्पन्न हो सकता है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अनुक्तावग्रह, ईहा, अवाय और धारणाके द्वारा वह उत्पन्न हो सकता है। कहा भी है --

पणवणिज्जा भावा अणंतभागो दु अणभिलप्पाणं।

पणवणिज्जाणं पुण अणंतभागो सुदणिवद्धो \*॥३॥

आचार्यः \*\*पादमाचष्टे पादः शिष्य स्वमेधसा\*\*\*।

तद्विद्यसेवया पादः पादः कालेन पच्यते॥४॥

(\* गो. जी. ३४४. विशेषा. १४१.)

(\*\* अ आ प्रत्योः 'पद' इति पाठः।)

(\*\*\* म प्रति पाठोऽयम्। अ आ प्रत्योः 'पादशिष्यस्य मेधया', ता प्रतौ 'पादः शिष्यस्य मेधया' इति पाठः।)

वचनके अगोचर अर्थात् केवलज्ञानके विषयभूत जीवादिक पदार्थोंके अनन्तर्वे भागमात्र प्रज्ञापनीय अर्थात् तीर्थंकरकी सातिशय दिव्यध्वनिके द्वारा प्रतिपादनके योग्य हैं। तथा प्रतिपादनके योग्य उक्त जीवादिक पदार्थोंका अनन्तवाँ भाग मात्र श्रुतनिबद्ध है॥३॥

आचार्य एक पादको कहते हैं, एक पादको शिष्य अपनी बुद्धिसे ग्रहण करता है, एक पाद उसके जानकार पुरुषोंकी सेवासे प्राप्त होता है, तथा एक पाद समयानुसार परिपाकको प्राप्त होता है॥४॥

एदिस्से संखेज्जभागवद्धीए उवरि सव्वजीवरासी भागहारो होदूण गच्छदि जाव कंडयमेत्तअणंतभागवद्धिद्धाणाणं चरिमउव्वंकड्डाणे त्त। पुणो असंखेज्जभागवद्धिद्धाणां होदि। एदस्स भागहारो असंखेज्जा लोगा। एवं सकंडय-कंडयवग्गमेत्ताणि अणंतभागवद्धिद्धाणाणि कंडयमेत्ताणि असंखेज्जभागवद्धिद्धाणाणि च गंतूण बिदियसंखेज्जभागवद्धिद्धाणमुप्पज्जदि। जहण्णद्धाणां पुण पेक्खिदूण पढमसंखेज्जभागवद्धिद्धाणादो उवरि दुगुणवद्धीदो हेद्धा सव्वत्थ संखेज्जभागवद्धी चेव।संपहि एत्तो प्पहुडि उवरिमसंखेज्जभागवद्धीणं परूवणाए कीरमाणाए

अणंतभागवद्धिअसंखेज्जभागवद्धीयो छोड्ढिदूण परूवणं कस्सामो। कुदो? तारिं वद्धीणं अइत्थोवत्तणेण पहाणत्ताभावादो।

इस संख्यातभागवृद्धिके आगे सब जीवराशि भागहार होकर काण्डकप्रमाण अनन्तभागवृद्धिस्थानोंके अन्तिम ऊर्वक स्थानतक जाती है। फिर असंख्यातभागवृद्धिस्थान होता है। इसका भागहार असंख्यात लोक है। इस प्रकार काण्डकसहित काण्डकके वर्गप्रमाण अनन्तभागवृद्धिस्थान और काण्डकप्रमाण असंख्यात भागवृद्धिस्थान जाकर द्वितीय संख्यातभागवृद्धिस्थान उत्पन्न होता है। परन्तु जघन्यस्थानकी अपेक्षा प्रथम संख्यातभागवृद्धिस्थानसे ऊपर और दुगुणवृद्धिसे नीचे सर्वत्र संख्यातभागवृद्धि ही होती है।

अब यहाँसे लेकर उपरिम संख्यातभागवृद्धियोंकी प्ररूपणा करनेमें अनन्तभागवृद्धि और असंख्यात भागवृद्धिको छोड़कर प्ररूपणा करते हैं, क्योंकि, बहुत थोड़ी होनेसे उन वृद्धियोंकी प्रधानता नहीं है।

संपहि बिदियसंखेज्जभागवद्धिपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- हेद्धिमउव्वंकस्सुवरि वद्धिददव्वं पुध डुविदे सेसं जहण्णट्टाणं (\* अ प्रतौ 'जहण्णट्टाणो' इति पाठः।) होदि। पुणो तम्मि उक्कस्ससंखेज्जेण भागे हिदे एगो संखेज्जभागवद्धिपक्खेवो लब्भदि। एदं पुध डुविय पुणो उक्कस्ससंखेज्जेण पुव्वं पुध डुविदसंखेज्जभागवद्धिपक्खेवे भागे हिदे एगं संखेज्जभागवद्धिपिसुलं लब्भदि त्ति (\* अ आ प्रत्योः 'लब्भदि तो', ता प्रतौ 'लब्भदि तो (त्ति)' इति पाठः।) एवमेगपक्खेवमेगपिसुलं च घेत्तूण उवरिमउव्वंकं पडिरासिय पक्खित्ते बिदियसंखेज्जभागवद्धिट्टाणं होदि। बिदियसंखेज्जभागवद्धिट्टाणं णाम जहण्णट्टाणं पेक्खिदूण दोहि संखेज्जभागवद्धिपक्खेवेहि एगेण संखेज्जभागवद्धिपिसुलेण च अहियं होदि।

अब द्वितीय संख्यातभागवृद्धिकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- अधस्तन ऊर्वकके ऊपर वृद्धिप्राप्त द्रव्यको पृथक् स्थापित करनेपर शेष रहा जघन्य स्थान होता है। फिर उसमें उत्कृष्ट संख्यातका भाग देनेपर एक संख्यातभागवृद्धिप्रक्षेप प्राप्त होता है। इसको पृथक् स्थापित कर फिर उत्कृष्ट संख्यातका भाग देनेपर एक संख्यातभागवृद्धिप्रक्षेप प्राप्त होता है। इसको पृथक् स्थापित कर फिर पूर्वमें पृथक् स्थापित संख्यातभागवृद्धिप्रक्षेपमें उत्कृष्ट संख्यातका भाग देनेपर एक संख्यातभागवृद्धि पिशुल होता है। इस प्रकार एक प्रक्षेप और एक पिशुलको ग्रहण कर उपरिम ऊर्वकको प्रतिराशि करके मिलानेपर द्वितीय संख्यातभागवृद्धिस्थान

होता है। द्वितीय संख्यातभागवृद्धिस्थान जघन्य स्थानकी अपेक्षा दो संख्यातभागवृद्धिप्रक्षेपों और एक संख्यातभागवृद्धिपिशुलसे अधिक होता है।

एदेसिं जहण्णद्वाणादो उप्पत्ती वुच्चदे। तं जहा -- उक्कस्ससंखेज्जयस्स अद्धं विरलेदूण जहण्णद्वाणं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स दो-दोसगलपक्खेवा पावेति। पुणो एदस्स हेद्वा दुगुणमुक्कस्ससंखेज्जं विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि एगेगपिसुलपमाणं पावदि। पुणो एदमुवरिमरूवधरिदेसु (\*अ आ प्रत्योः 'एदमुवरि रूवधरिदेसु', ता प्रतौ 'एदमुवरिमधरिदेसु' इति पाठः।) दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणं परूवणं कस्सामो। तं जहा -- रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठिदाए किंचूणो एगरूवस्स चदुब्भागो आगच्छदि। एदमुवरिमविरलणाए सोहिय सुद्धसेसेण जहण्णद्वाणे भागे हिदे बेपक्खेवा एगपिसुलं च लब्भदि। पुणो लद्धे जहण्णद्वाणं पडिरासिय पक्खित्ते विदियसंखेज्जभागवृद्धिद्वाणमुप्पज्जदि। एवमुवरिमसंखेज्जभागवृद्धिद्वाणाणं सव्वेसिं पि जाणिदूण भागहारो परूवेदव्वो जाव चरिमसंखेज्जभागवृद्धिद्वाणे ति। तदुवरि संखेज्जगुणवृद्धिद्वाणं होदि।

इनकी जघन्य स्थानसे उत्पत्तिको कहते हैं। वह इस प्रकार है -- उत्कृष्ट संख्यातके अर्ध भागका विरलन कर जघन्य स्थानको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति दो दो प्रक्षेप प्राप्त होते हैं, फिर इसके नीचे दुगुणे उत्कृष्ट संख्यातका विरलन कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति एक एक पिशुलका प्रमाण प्राप्त होता है। इसको उपरिम अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्योंमें देकर समीकरण करनेपर हीन अंकोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र अध्वान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंकका कुछ कम चतुर्थ भाग आता है। इसको उपरिम विरलनमेंसे कम करके शेषका जघन्य स्थानमें भाग देनेपर दो प्रक्षेप और एक पिशुल प्राप्त होता है। फिर लब्धको प्रतिराशीकृत जघन्य स्थानमें मिलानेपर द्वितीय संख्यातभागवृद्धिस्थान उत्पन्न होता है। इस प्रकार अन्तिम संख्यातभागवृद्धिस्थानतक सभी उपरिम संख्यातभागवृद्धिस्थानोंके भागहारकी जानकर प्ररूपणा करनी चाहिए। इससे आगे संख्यातगुणवृद्धिस्थान होता है।

संपहि संखेज्जभागवद्धिकमेण जहण्णद्वाणादो अणुभागद्वाणेसु वड्डमाणेसु केत्तियमद्धानं गंतूण दुगुणवड्डी होदि ति जाणावणद्धं परुवणा कीरदे । तं जहा -- एत्थ बालजणाणं बुद्धिजणणद्धं तीहि पयारेहि दुगुणवद्धिपरुवणा कीरदे (\* अ प्रतौ 'कीरदे' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते) । कथं तिविहा परुवणा कीरदे? थूला मज्झिमा सुहुमा चेदि । तत्थ ताव थूलपरुवणं कस्सामो -- जहण्णद्वाणादो उवरि उक्कस्समसंखेज्जमेत्तेसु संखेज्जभागवद्धिद्वाणेसु गदेसु दुगुणवद्धि होदि । कुदो? उक्कस्ससंखेज्जमेत्त(\* ता प्रतौ '-- संखेज्जमेत्तसंखेज्जमेत्त' इति पाठः)।संखेज्जभागपक्खेवेहि एगजहण्णद्वाणुप्पत्तीदो वद्धिजणिदजहण्णद्वाणेण सह ओघजहण्णद्वाणस्स तत्तो दुगुणत्तदंसणादो । कधमेदिस्से परुवणाए थूलत्तं? पिसुलादीणि मोत्तूण पक्खेवेहिंतो चेव उप्पण्णजहण्णद्वाणेण दुगुणत्तपरुवणादो ।

अब संख्यातभागवृद्धिक्रमसे जघन्य स्थानसे अनुभागस्थानोंके बढ़नेपर कितना अध्वान जाकर दुगुणी वृद्धि होती है यह जतलानेके लिए प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है -- यहाँ अज्ञानी जनोंके बुद्धि उत्पन्न करानेके लिए तीन प्रकारसे दुगुणवृद्धिकी प्ररूपणा करते हैं । कैसे तीन प्रकारसे प्ररूपणा की जाती है? वह स्थूल, सूक्ष्म और मध्यमके भेदसे तीन प्रकार है । उनमें पहले स्थूल प्ररूपणा करते हैं -- जघन्य स्थानके आगे उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण संख्यातभागवृद्धिस्थानोंके बीतनेपर दुगुणवृद्धि होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण संख्यातभागप्रक्षेपोंसे एक जघन्य स्थानके उत्पन्न होनेसे वृद्धिजनित जघन्य स्थानके साथ ओघ जघन्य स्थान उससे दुगुणा देखा जाता है ।

शंका -- यह प्ररूपणा स्थूल कैसे है?

समाधान -- कारण कि इसमें पिशुलादिकोंको छोड़कर प्रक्षेपोंसे ही उत्पन्न जघन्य स्थानसे दुगुणत्वकी प्ररूपणा की गयी है ।

संपहि मज्झिमपरुवणा कीरदे । तं जहा -- अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु संखेज्जभागवद्धिद्वाणेसु उक्कस्ससंखेज्जमेत्त(\* ता प्रतौ '-- संखेज्जमेत्तसंखेज्जमेत्त' इति पाठः)।संखेज्जभागवद्धिद्वाणाणं पढमद्वाणप्पहुडि रचणं कादूण तत्थ उक्कस्ससंखेज्जयस्स तिण्णिचदुब्भागमेत्तद्धानमुवरि गंतूण दुगुणवड्डी होदि । उक्कस्ससंखेज्जयमिदि संदिट्ठीए सोलस घेत्तव्वा । उक्कस्समसंखेज्जस्स जहण्णद्वाणे भागे हिदे संखेज्जभागवड्डी होदि । तम्मि जहण्णद्वाणे पक्खित्ते पढमसंखेज्जभागवद्धिद्वाणं उप्पज्जदि । दोपक्खेवेसु एगपिसुले च जहण्णद्वाणे पक्खित्ते

विदियसंखेज्जभागवद्धिद्वाणं होदि। तिसु पक्खेवेसु तिसु पिसुलेसु एगपिसुलापिसुले च जहण्णद्वाणे पडिरासिय पक्खित्ते तदियसंखेज्जभागवद्धिद्वाणं होदि। चदुसु पक्खेवेसु छसु पिसुलेसु चदुसु पिसुलापिसुलेसु एकपिसुलापिसुले ( \* ता प्रतिपाठोऽयम्। अ आ प्रत्योः 'एगपिसुलापिसुले' इति पाठः।) च जहण्णद्वाणे पडिरासिय पक्खित्ते चउत्थसंखेज्जभागवद्धिद्वाणं होदि। एवमुवरि वि जाणिदूण णेयव्वं। णवरि पक्खेवा एगादिएगुत्तरकमेण वड्ढंति। पिसुलाणि रूवूणचडिदद्वाणसंकलणारूवेण वड्ढंति। पिसुलापिसुलाणि दुरुवूणचडिदद्वाणविदियवारसंकलणारूवेण वड्ढंति। पिसुलापिसुलाणि तिरूवूणचडिदद्वाणतदियवारसंकलणारूवेण गच्छंति। एवमुवरिमाणं पि वत्तव्वं।

तेसिमेसा संदिद्धी --

(\* अ आ का प्रतिषु प्रारम्भे शून्यमेकमधिके तथा समाप्तौ शून्यद्वयमुपलभ्यते। )

o

o

o

o

oooooooooooooooo

oooooooooooooooo

oooooooooooooooo

oooooooooooo

oooooooooooo

oooooooooooo

oooooooooooo

oooooooooooo

oooooo

oooo

ooo

अब मध्यमप्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है -- अंगुलके असंख्यातर्वे भागमात्र संख्यातभागवृद्धिस्थानमें उत्कृष्ट संख्यात मात्र संख्यातभागवृद्धिस्थानोंके प्रथम स्थानसे लेकर रचना करें। उनमें उत्कृष्ट संख्यातका तीन चतुर्थ भाग (३/४) मात्र अध्वान आगे जाकर दुगुणवृद्धि होती है। उत्कृष्ट संख्यातके लिए सन्दृष्टिमें सोलह (१६) अंक ग्रहण करने चाहिए। उत्कृष्ट संख्यातका जघन्य स्थानमें भाग देनेपर संख्यात भागवृद्धि होती है। उसको जघन्य स्थानमें मिलानेपर प्रथम संख्यातभागवृद्धिस्थान उत्पन्न होता है। दो प्रक्षेपों और एक पिशुलको जघन्य स्थानमें मिलानेपर द्वितीय संख्यातभागवृद्धिस्थान उत्पन्न होता है। तीन प्रक्षेपों, तीन पिशुलों और एक पिशुलापिशुलको जघन्य स्थानमें प्रतिराशि करके मिलानेपर तृतीय संख्यातभागवृद्धिस्थान होता है। चार प्रक्षेपों, छह पिशुलों, चार पिशुलापिशुलों और पिशुलापिशुलको जघन्य स्थानमें प्रतिराशि करके मिलानेपर चतुर्थ संख्यातभागवृद्धिस्थान होता है। इस प्रकारसे आगे भी जानकर ले जाना चाहिए। विशेष इतना है कि प्रक्षेप एकसे लेकर अधिक क्रमसे बढ़ते हैं। पिशुल एक कम बीते हुए अध्वानके संकलन स्वरूपसे बढ़ते हैं। पिशुलापिशुल दो कम गये हुए अध्वानके द्वितीय बार संकलन स्वरूपसे बढ़ते हैं। पिशुलापिशुल तीन कम गये हुए अध्वानके तृतीय बार संकलनस्वरूपसे जाते हैं। इस प्रकारसे आगे भी कहना चाहिए। उनकी यह सन्दृष्टि है। (मूलमें देखिए।)